शुक्रवार

वर्ष 9 अंक 11 ■ 1-15 जून 2016 ■ ₹ 20

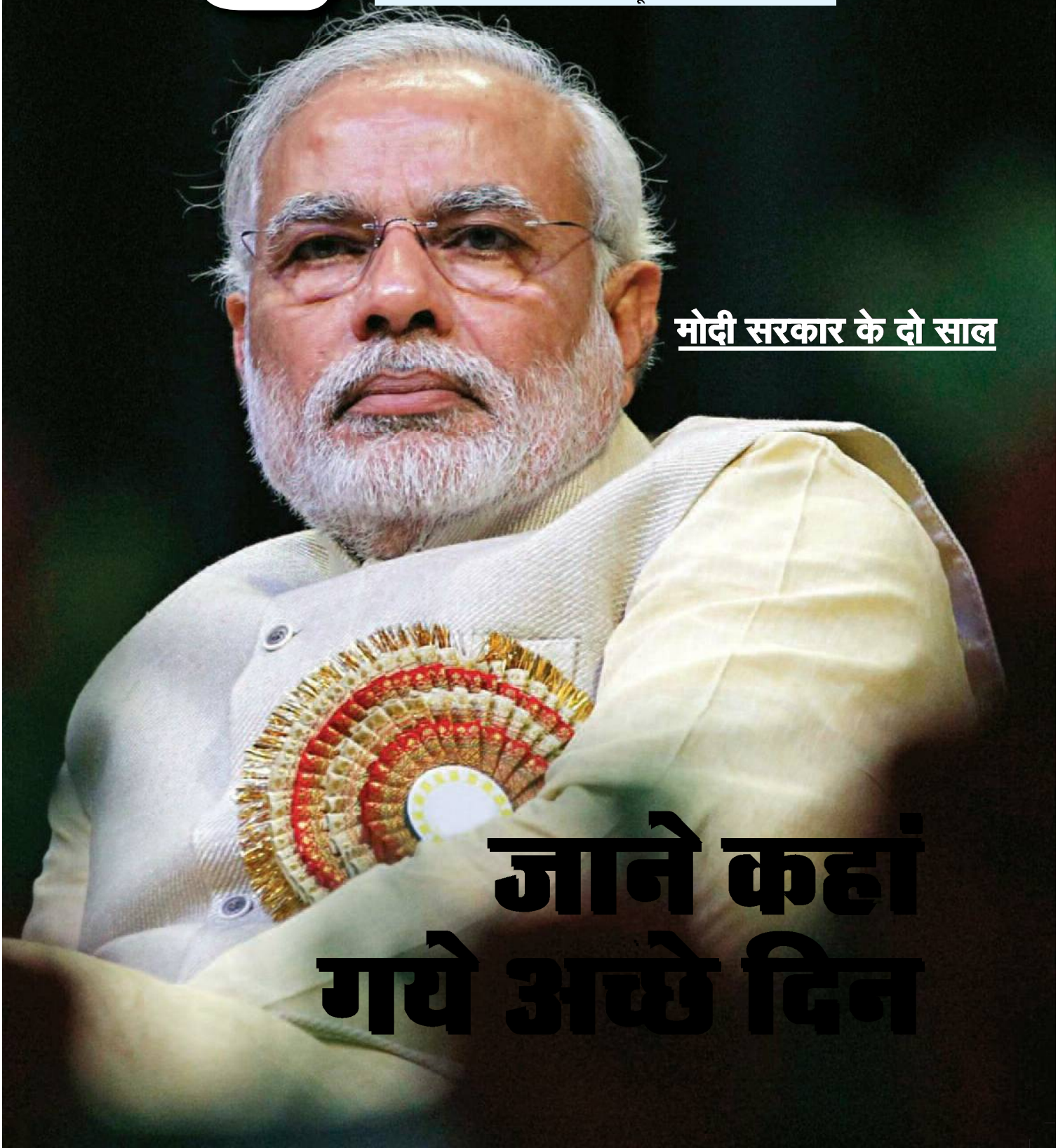

मोदी सरकार के दो साल

जाने कहां गये अच्छे दिन

वर्धा, गांधी और विनोबा

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति गिरीश्वर मिश्र से अरुण त्रिपाठी की बातचीत.

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा इस वर्ष किन नये विषयों में नियमित पाठ्यक्रम प्रारंभ करने जा रहा है. उनमें दाखिले के लिए क्या नीति बनायी गयी है?

भारत के मध्य में अवस्थित, गांधी और विनोबा की कर्म-भूमि वर्धा में स्थापित इस उच्च शिक्षा के केंद्र की संकल्पना एक विशेष उद्देश्य से की गयी थी. एक विश्वविद्यालय के रूप में इसे विद्याध्ययन के परम्परागत और आधुनिक दोनों ही क्षेत्रों में हिंदी को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने के लिए समर्पित किया गया. स्थापना के साथ इसे हिंदी को विचार और ज्ञान-सर्जन की भाषा के रूप में समर्थ बनाने के लिए एक प्रभावी हस्तक्षेप के रूप में ढाला गया. अध्ययन, शोध, प्रकाशन, संवाद और सामाजिक प्रतिभागिता सभी दृष्टियों से यह विश्वविद्यालय निरंतर उत्कृष्टता के मानकों की ओर अग्रसर हो रहा है. अपनी क्षमता, संसाधन और प्रतिबद्धता को ध्यान में रखते हुए नये अकादमिक सत्र में शिक्षा, विधि, भाषा तथा साहित्य के क्षेत्रों में कई नये पाठ्यक्रम आरम्भ करने की योजना है. प्रशिक्षित अध्यापकों की आवश्यकता को देखते हुये भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा शिक्षा शास्त्र के अध्ययन और अध्यापन पर विशेष बल दिया जा रहा है.

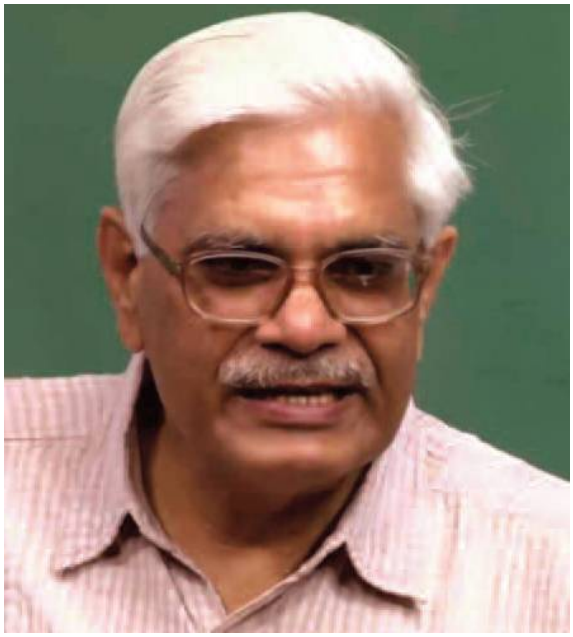

गिरीश्वर मिश्रः नया पाठ्यक्रम

कुलपति के रूप में दो वर्ष के अपने कार्यकाल का आकलन आप कैसे करते हैं?

यह विश्वविद्यालय संभावनाओं से भरा है. अपेक्षाकृत नया होने के कारण और निष्ठावान तथा उद्यमी प्राध्यापकों के कारण इसके विकास के लिए अनेक अवसर उपलब्ध हैं. यहां के उत्साही प्राध्यापक हिंदी माध्यम से अनेक नये और दुरूह विषयों का भी अध्यापन करते हैं. विश्वविद्यालय के अध्ययन, अध्यापन और शोध आदि कार्यों का मूल्यांकन कर नैक द्वारा वर्ष 2015 में 'ए' ग्रेड प्रदान किया गया. इन दो वर्षों में अध्यापकों की लगन, प्रतिभा और प्रयास से कई नये कार्य शुरू हो सके. व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का संचालन (बी.वोक. प्रदर्शनकारी कला और कम्यूनिटी कालेज) आरम्भ हुआ. हिंदी शिक्षण प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना हुई. जिसमें मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सह्योग से अनेक कार्य जैसे पुनश्चर्या, राष्ट्रीय संगोष्ठी, पाठ्यक्रम निर्माण, शोध योजना, पुस्तक लेखन आदि के अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये जा रहे हैं. विश्वविद्यालय के सुयोग्य प्राध्यापकों द्वारा शोध की अनेक परियोजनाओं का संचालन किया जा रहा है जिस हेतु लगभग साठ लाख रूपये के अनुदान प्राप्त हुए हैं. विश्वविद्यालय ने अपने संसाधनों से प्राध्यापकों को शोध हेतु आर्थिक अनुदान प्रदान किया है और उन्हें शैक्षिक और शोध के कार्यों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने यहां के हिंदी विभाग के उन्नयन हेतु तीस लाख का विशेष अनुदान प्रदान किया है. विश्वविद्यालय हिंदी विषय में ई-पाठशाला के कार्यक्रम में हिस्सा ले रहा है. विश्वविद्यालय द्वारा प्रवासी भारतीयों के साहित्य तथा दलित साहित्य पर केंद्रित प्रकाशन किये गये हैं. विश्वविद्यालय की दो प्रमुख हिंदी पत्रिकाएं 'पुस्तक वार्ता' जो लगभग एक वर्ष तक बंद थी नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है. 'बहुवचन' भी नियमित रूप से प्रकाशित हो रहा है. 'वर्धा हिन्दी कोश' का द्वितीय संशोधित और परिवर्धित संस्करण और 'भोजपुरी–हिन्दी-अंग्रेजी कोश' प्रेस में हैं. अंग्रेजी में 'एनल्स आफ हिंदी स्टडीज' नाम से प्रकाशन प्रेस में है. विश्वविद्यालय के निर्माणाधीन भवन जो अधूरे पड़े थे उनके लिए अनुदान प्राप्त कर उन्हें पूर्ण किया जा रहा है. अध्यापकों के रिक्त पदों पर नियुक्तियां हुई हैं तथा छात्रों की संख्या में वृद्धि हुयी है. सभी विषयों के पाठ्यक्रमों को संशोधित और अद्यतन किया गया है. आंबेडकर पर वार्षिक व्याख्यान आरंभ हुआ. प्रथम व्याख्यान प्रोफेसर सुखदेव थोरात ने दिया. अतिथि लेखकों की योजना के अंतर्गत विश्वविद्यालय में अनेक गणमान्य लेखक-चिंतक आये और विश्वविदालय परिसर को समृद्ध किया.

वर्धा के विद्या परिसर में उच्च शिक्षा तथा शोध का मानक उन्नत करने के लिए आपकी योजनाएं कितनी सफल रही हैं?

यहां पर हर अध्यापक मूलतः हिंदी का है और हिंदी से है. अतः वह सहज रूप से हिंदी की चिंता से जुड़ा है. हिंदी उनकी पहचान और जीवन है. वे कुछ करने के लिए सदैव सक्रिय रहते हैं. हिंदीतर अन्य विषयों और विमर्शों के प्रति उनकी संवेदना अपेक्षाकृत सीमित है. एक विदेशी या देसी भाषा का अध्ययन तथा कम्प्यूटर अध्ययन सभी छात्रों के लिए अनिवार्य विषय हैं.

विद्यार्थियों में ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण विकसित करने के लिए क्या कुछ किया जा रहा है?

विश्वविद्यालय के सभी कर्मठ और सजग अध्यापक परिसर में छात्रों के लिए परामर्श हेतु उपलब्ध रहते हैं. वे छात्रों को दृष्टि विकसित करने में सहायक होते हैं. छात्रों के अध्ययन और सर्वांगीण विकास के लिए विश्वविद्यालय परिसर में वाई-फाई की सुविधा, छात्रावास की सुविधा, पुस्तकालय, विभिन्न विभागों की इलेक्ट्रोनिक पत्रिकाएं, समय-समय पर विद्वानों और विचारकों के व्याख्यान, शिक्षा प्रात करते हुए कार्यानुभव की व्यवस्था और सांस्कृतिक कार्यक्रम बड़े उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं. ऐसा हमारा विश्वास है. ■